प्रोफेसर डॉ.पद्मा पाटील
एम्.ए.,एम्.फिल.,पीएच्.डी.
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

संस्तुति

मैं संस्तुति करती हूँ कि सुश्री.गीता रामचंद्र दोडमणी द्वारा लिखित 'भारतभूषण अग्रवाल का 'अग्नि-लीक' : एक अध्ययन'' शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

स्थान : कोल्हापुर

तिथि : 13/03/2009

(प्रो.डॉ.पद्मा पाटील)

प्रोफेसर डॉ.पद्मा पाटील
एम्.ए.,एम्.फिल.,पीएच्.डी.
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करती हूँ कि सुश्री.गीता रामचंद्र दोडमणी ने मेरे शोध निर्देशन में "भारतभूषण अग्रवाल का 'अग्नि-लीक' : एक अध्ययन" लघु शोध-प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल.(हिंदी) उपाधि हेतु सफलतापूर्वक एवं पूरे परिश्रम के साथ लिखा है। यह उनका मौलिक कार्य है। जो तथ्य इस लघु शोध प्रबंध में प्रस्तुत किए है, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। यह कार्य इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं ~~की गई~~ है। शोध-छात्रा के प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट होकर ही इसे परीक्षणार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान करती हूँ।

शोध-निर्देशिका

(प्रो.डॉ.पद्मा पाटील)

डॉ.पद्मा पाटील
एम्.ए.,एम्.फिल.,पीएच्.डी.
प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष
हिंदी विभाग,शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर -416004

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 13/03/2009

प्रख्यापन

मैं प्रख्यापित करती हूँ कि भारतभूषण अग्रवाल का 'अग्नि-लीक' : एक अध्ययन'' यह शोध-प्रबंध मेरी मौलिक कार्य है जो एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रहा है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

शोध-छात्रा

(सुश्री.गीता रामचंद्र दोडमणी)

स्थान : कोल्हापुर

तिथि :

प्राक्कथन

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का विषय है ''भारभूषण अग्रवाल का 'अग्नि-लीक' : एक अध्ययन'' वैसे तो मुझे कविता में कोई रूचि नहीं थी। मैं तो उपन्यास विधा से एम.फिल. करना चाहती थी किन्तु एक दिन जनरल लेक्चर लेते समय आदरणीय गुरूवर्या डॉ. पद्मा पाटील जी ने अपने लेक्चर में भारतभूषण अग्रवाल जी के 'अग्नि-लीक' खंडकाव्य की चर्चा की। मुझमें आत्मविश्वास ही नहीं था कि मैं कविता में एम.फिल. कर सकूंगी किन्तु गुरूवर्या डॉ.पद्मा पाटील जी से मिलने के बाद मुझमें आत्मविश्वास निर्माण होता गया। मुझमें आत्मविश्वास भर देनेवाली महान व्यक्ति कोई और न होकर स्वयं डॉ.पद्मा पाटील मॅडम(हैं) मैं यह कहना चाहूँगी कि अगर मॅडम ने मुझ में विश्वास पैदा कर न दिया होता तो शायद मैं एम.फिल. भी नहीं कर पाती।

भारतभूषण अग्रवाल आधुनिक कविता के 'नई कविता' के महत्त्वपूर्ण कवि हैं। ये अज्ञेय के तारसप्तक में संकलित किए गए हैं। उनकी अनेक कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं। उन्होंने कविता के साथ-साथ गद्य लेखन भी किया है। कविता के क्षेत्र में भी उन्होंने अनेक प्रयोग किए हैं। उनकी प्रारंभिक कविताओं से स्पष्ट होता है कि सपनों की जिंदगी में डूबने की इनकी आदत रही है। उनकी कविता अनेक भिन्न-भिन्न मोडों से गुजरी है। उनकी कविताओं में आदर्श तथा उच्चता का निर्वाह हैं। इन्हीं बातों ने मुझे उनकी कविताओं की तरफ आकर्षित किया।

इसी कारण एम.फिल. उपाधि हेतु के लघुशोध प्रबंध के लिए उनके 'अग्नि-लीक' (1976) खण्डकाव्य को चुना है। भारतभूषण अग्रवाल जी के 'अग्नि-लीक' को काव्यनाटक भी कहा जाता है। इसमें कवि ने अतीत चरित्रों को मानवीय रूप देकर वर्तमान काल के अनुसार अंकित किया है। मेरे मन में अनेक जिज्ञासाएँ जागृत हुई। अतीत के कौनसे चरित्रों को कवि भारत जी ने मानवीय रूप दिया? उन पात्रों का चरित्रांकन वर्तमान काल में कवि ने क्यों किया होगा? आधुनिक काव्य में इस तरह के काव्य का सृजन क्यों हुआ होगा? आधुनिक कविता की विकास प्रक्रिया पर नजर डालने से स्पष्ट होता गया कि केवल भारतभूषण अग्रवाल ही नहीं तो इस काल के अनेक कवि ऐसे हैं जिन्होंने अतीत के चरित्रों को कविता में स्थान दिया है। 'अग्नि-

लीक'में राम, सीता, वाल्मीकि जैसें चरित्रों को कविता में स्थान दिया है और वर्तमान कालीन परिवेश के आधार पर उन्हें अंकित किया है। भारतभूषण अग्रवाल के कविता संग्रह अनेक हैं। परंतु अनुसंधान की मर्यादा हेतु केवल एक काव्य कृति 'अग्नि-लीक'(1976 इ.वि.) का चयन किया है। भारतभूषण अग्रवाल की इस कृति पर शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर में अब तक कोई अनुसंधान कार्य एम.फिल. उपाधि हेतु नहीं हुआ है। अतः इस विषय पर मेरा लघु शोध प्रबंध का शोध कार्य नया होगा।

इस विषय का अध्ययन प्रारंभ करते समय मेरे मन में निम्नलिखित प्रश्न खड़े हुए थे।

1) भारतभूषण अग्रवाल का जीवन परिचय क्या होगा? और रचनाओं की विशेषताएँ क्या होगी?

2) उनकी विचारधारा क्या रही होगी?

3) नयी कविता के अन्य कवि कौन-कौन से होंगे? अग्रवाल की कविता में 'नई कविता' के कौन-कौनसे विशेष मिलते हैं?

4) 'अग्नि-लीक' में पुराण पात्रों को उन्होंने मानवीय धरातल पर कैसे तथा क्यों अंकित किया होगा?

अनुसंधान सुचारू रूप से संपन्न कराने के लिए उसे निम्न अध्यायों में विभाजित किया है ।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय में कवि भारतभूषण अग्रवाल के जीवन तथा रचनात्मक परिचय को दिया गया है। उनका जन्म, स्थान, तिथि, शिक्षा, पारिवारिक वातावरण, विचार-प्रणाली, रचनाएँ आदि का अध्ययन इस अध्याय में किया है तथा निष्कर्ष दिए गए है।

द्वितीय अध्याय में भारतभूषण अग्रवाल के काव्य विकास पर नजर डाली है। कवि भारत जी नई कविता के कवि हैं। नई कविता के अन्य कवियों में उनके स्थान को प्रस्तुत किया है। इस अध्याय में उनकी कविता के विकास क्रम को प्रस्तुत किया है और निष्कर्ष दिए हैं।

तृतीय अध्याय में 'अग्नि-लीक' का खंडकाव्य तथा काव्य नाटक के तत्त्वों के आधार पर अध्ययन किया गया है। इसमें खंडकाव्य विषयक भारतीय, पाश्चात्य मतों को संक्षेप में प्रस्तुत किया है। उनकी परिभाषाएँ देखी है। प्रमुख तत्त्वों के अनुसार, कथानक, पात्र और चरित्र चित्रण, देशकाल वातावरण, उद्देश्य, रस, शैली को प्रस्तुत किया है। युगबोध और आधुनिकता और परंपरा को संक्षेप में प्रस्तुत किया है। 'सीता निर्वासन' के प्रसंग सम्बन्धित कुछ अन्य खंडकाव्यों को संक्षेप में दिया है तथा निष्कर्ष दिए है।

चतुर्थ अध्याय में 'अग्नि-लीक' के भाषा सौंदर्य को प्रस्तुत किया है। भाषा, भावों या विचारों की अभिव्यक्ति तथा संप्रेषण का साधन होती हैं। भारतभूषण अग्रवाल ने कविता में अनुभूति और शिल्प को अलग नहीं माना है। उन्होंने शिल्प के स्तर पर अनेक प्रयोग किए है। इसमें भाषा, सरलीकरण, प्रवाहशीलता, प्रेषणीयता, प्रतीकात्मकता, भाषा की की विशालता, पौरूष और ओजगुण से ओतप्रोत भाषा, भावानुकूल भाषा, प्रश्नात्मक भाषा, गद्यात्मक भाषा, संवादात्मक भाषा, मुहावरों का प्रयोग, पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग आदि को प्रस्तुत किया हैं। इसके बाद निष्कर्ष दिए है।

प्रबंध के अन्त में उपसंहार दिया गया है। प्रस्तुत उपसंहार प्रबंध का सार -रूप हैं। इसमें पूरे अध्यायों के निष्कर्ष दिए गये हैं। उपसंहार के बाद संदर्भ ग्रंथ सूची दी है।

मेरे श्रध्देय गुरूवर्या डॉ.पद्मा पाटील जी के आभार के लिए किन शब्दों का प्रयोग करू? मेरे पास शब्द ही नहीं हैं क्योंकि शब्दों में आभार प्रकट करना याने उनके स्नेह को छोटा करना है। आपने मुझमें आत्मविश्वास निर्माण करके मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया है। मैं आपकी जिंदगीभर ऋणी रहूँगी।

इस लघुशोध प्रबंध को पूरा करने के लिए मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रिति से जिनकी मदद मिली है मैं उन सब की आभारी हूँ। इस शोध प्रबंध को संगणक द्वारा आर्कषक टाईप करने वाले श्री मिलिंद भोसले जी का मैं आभार प्रकट करती हूँ।

कोल्हापुर,

शोध छात्रा
दोडमणी गीता